P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-11* February- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा–स्तर पर अभिभावक के प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा–स्तर पर अभिभावक के प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन करना है शोधार्थी ने अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रुप में यू.पी. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त दो उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया प्रस्तुत शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रुप में विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा–स्तर पर अभिभावक के प्रोत्साहन पर सकारात्मक प्रभाव है एवं अन्य महत्वपूर्ण परिणामो का अध्ययन किया गया।

संजय गौतम
शोधार्थी,
शिक्षा संकाय,
एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा

विक्रांत भास्कर
शोधार्थी,
शिक्षा संकाय,
एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा

मुख्य शब्द : आकांक्षा–स्तर, प्रोत्साहन।

प्रस्तावना

शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु होता है। एक आदर्श शिक्षक अपने अपूर्व उत्साह एवं ऊर्जा द्वारा शैक्षिक संस्थाओं को गति प्रदान करता है जिसमें उसका अपना निजी स्वार्थ नहीं होता बल्कि वह राष्ट्र के लिये अच्छे नागरिक तैयार करने में प्रयत्नशील रहता है शिक्षक के बिना आधुनिक युग की सुविधाओं से सुसज्जित संस्थायें उस शरीर के समान हैं जिसमें से आत्मा निकल जाती है और मृत शरीर पड़ा रहता है जिससे कुछ कार्य नहीं किया जा सकता।

अध्यापक समाज की रीढ़ के समान है जिसके बिना बालक सीधा तो खड़ा रह सकता है परन्तु समाज में पूर्ण प्रतिष्ठित नहीं हो सकता है क्योंकि कोरी प्लेट रूपी बालक के ऊपर स्वच्छ अक्षरों में सुस्पष्ट लेखन कार्य एक योग्य अध्यापक ही कर सकता है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। राष्ट्र की समग्र प्रगति में शिक्षक की भागीदारी सर्वविदित है। वे एक जागरूक समाज के निर्माण में अग्रणी रहते हैं। अतः कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के व्यावसायिक उत्थान में पीछे नहीं रह सकता है। एक आदर्श एवं कुशल शिक्षक में मुख्यतः संवेदनशीलता, अध्ययनशीलता, अध्यापन क्षमता, लेखन क्षमता, दिशा निर्देशन की क्षमता, विषय निर्देशन की क्षमता, विषय का सूक्ष्म ज्ञान, चारित्रिक दृढ़ता, शिक्षण में रूचि, शिक्षण कौशलों का ज्ञान तथा सामाजिक दायित्व बोध इत्यादि गुण होने चाहिये।

सामाजिक सन्दर्भ में शिक्षक, विद्यार्थी में राष्ट्रीयता, सामाजिकता, विश्वबंधुत्व की भावना को जगाकर उसे सामाजिक दायित्वबोध से परिचित कराता है। किसी भी देश काल की शिक्षा पद्धति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का है। यह सम्पूर्ण विश्व अपने उन सभी शिक्षकों का ऋणी है जिन्होंने ज्ञान के आधार पर संसार के आध्यात्मिक एवं भौतिक स्वरूप का निर्माण किया है। श्रेष्ठ अध्यापकों के अभाव में सुयोग्य छात्रगण वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते हैं अच्छी से अच्छी पाठ्य–पुस्तक भी निपुण शिक्षकों की अनुपस्थिति में प्राणहीन हो जाती हैं। शिक्षा व्यवस्था चाहे जैसी हो शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि होती है अर्थात् समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चहुँ ओर विचरण करती है। आज वर्तमान समाज व राष्ट्र परिवर्तन और विकास के महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आदर्शों एवं मूल्यों को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी भी शिक्षकों को वहन करनी होती है क्योंकि शिक्षक का कार्य ज्ञान व संस्कृति के संरक्षण तथा हस्तांतरण तक ही सीमित नहीं है बल्कि परिस्थितियों के अनुरूप सामाजिक परिवर्तन भी लाना है। अधिकांश व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए विशेष रूप से प्रेरित होते हैं जबकि कुछ कार्य को करने व सीखने के प्रति उदासीन रहते हैं।

सामान्यतः यह कह सकते है कि परिवारों ने, हमारी पाठ्यशालाओं एवं महाविद्यालय के शिक्षकों ने अथवा सरकार ने विद्यार्थियों में उपयुक्त प्रकार की उपलब्धि प्रेरणा को बढ़ाने में विशेष योगदान नहीं दिया है। अधिकांश अभिभावक तो अपनी सन्तानों को फीस, पुस्तक, कपड़े व दैनिक व्यय देना ही मात्र अपना कर्तव्य समझते हैं।

किशोरावस्था एवं सामाजिक परिवर्तन के कारण अभिभावक व छात्र/ छात्राओं के सम्बन्धों के कारण 'प्रोत्साहन' भी उचित दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक युग में जब अभिभावक दोनों ही व्यस्त हों तब वह बालकों को कितना शैक्षिक प्रोत्साहन प्रदान कर पाते हैं। इस प्रोत्साहन से किशोर कितना प्रभावित होते है।

एक विद्यालय में अध्ययनरत् सभी विद्यार्थियों को समान वातावरण उपलब्ध होता है परन्तु फिर भी उनकी आकांक्षा स्तर में भिन्नता रहती है क्या विद्यालय वातावरण के अतिरिक्त बालक के आकांक्षा स्तर पर पारिवारिक वातावरण का कोई प्रभाव पड़ता है तथा अभिभावक द्वारा प्रदान प्रोत्साहन व आकांक्षा स्तर के मध्य सम्बन्ध कैसा है ? अतः यह जानने के लिए शोधार्थी ने लघुशोध के लिए विचार किया है।

परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला होती है वह जो कुछ परिवार में सीखता है उसी का विकास विद्यालय एक समाज में होता है, अतः अभिभावक का उत्तरदायित्व होता है कि वह बालक को उचित वातावरण प्रदान करें जिससे वह अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके।

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि अत्यधिक निरंकुश स्वतन्त्रता बालक के विकास में बाधक होती है वहीं अत्यधिक कठोर अनुशासन बालक की प्रतिभा को कुंठित कर देता है तथा वे समझते है कि उनमें स्वतन्त्र रूप से कुछ करने की योग्यता नहीं है, ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि बालकों को समय–समय पर अभिभावक द्वारा उचित मार्ग–निर्देशन दिया जाये जिससे उनमें सही समझ ओर अनुभव विकसित हो सके। यदि अभिभावक द्वारा बालकों को सुझाव ओर प्रोत्साहन देने की प्रक्रिया अपनायी जाये तो उनकी क्षमता का स्वतः विकास हो सकेगा।

शैक्षिक व्यावसायिक जगत में आज यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि छात्राओं के आकांक्षा स्तर को किस प्रकार उन्नतशील किया जाये यदि हम छात्राओं के आकांक्षा स्तर को उन्नतशील करने में सफल होते हैं तो निःसंदेह उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठा सकते हैं क्योंकि आकांक्षा स्तर छात्रों के लिए प्रेरक स्त्रोत है।

पारिवारिक स्थिति, अभिभावक एवं शिक्षक छात्र सम्बन्ध को ध्यान में रखकर ही विद्यालय के क्रियाकलाप, पाठ्य सामग्री, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ आदि आयोजित कर सकते है साथ ही विद्यार्थियों की आकांक्षा या लक्ष्य प्राप्त करने की तीव्रता के लिए सामाजिक, आर्थिक स्तर, परिणामों का ज्ञान, उपलब्धि अभिप्रेरणा, आत्मविश्वास, लक्ष्य का स्वरूप, प्रतिष्ठा, सफलता आदि के अतिरिक्त 'प्रोत्साहन' को भी महत्वपूर्ण प्रभाव के रूप में देखा जायेगा। जिससे विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर को ऊँचे स्तर पर लाया जा सके।

साहित्यावलोकन

विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा – स्तर पर अभिभावक के प्रोत्साहन के प्रभाव से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में अनेक अध्ययन हुए हैं जिसमें से कुछ इस प्रकार है– शर्मा (2003), दीक्षित, अमित (2005), जैन (2006) एवं सिन्हा (2006),ऐडन (2007), कौल (2007), जैन (2009), उषा (2010), शर्मा 0आर0ए (2011), बिरला (2012), वेदई (2013), चार्ली (2013), बर्टर (2013), अनु (2013), अर्चना (2013), परवन (2013), जूरी (2013), श्रीपोप सिंह (2014), नीलम वर्मा (2015), हंसराज (2015) संतोष (2016), फर्त्याल (2017) आदि के द्वारा अध्ययन किये गये हैं।

शोध अध्ययन का औचित्य एंव महत्व

शिक्षा का एक प्रमुख कार्य समाज में क्रियात्मक एवं रचनात्मक कार्यो की प्रवृत्ति विकसित करना है तथा शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। अतः विद्यालय एवं परिवार इन तथ्यों से भली–भाँति परिचित होकर विद्यालय में शिक्षा प्रक्रिया, पाठ्य सहगामी क्रियाओं को आयोजित कर उनके लिए उचित वातावरण का निर्माण कर उनके आकांक्षा स्तर को ऊँचा उठाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे व उनको सृजनात्मक व संज्ञानात्मक प्रोत्साहन देकर उनका चहुमुँखी विकास कर सकेंगे।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

शोध के लिए समस्या के चयन और कथन के पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण कार्य समस्या का परिभाषीकरण है। यह समस्या के मूल और व्यावहारिकता को स्पष्ट करता है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर

"शिक्षा, संरचना 10+2+3 के अन्तर्गत 11वीं एवं 12वीं कक्षाएँ उच्चतर माध्यमिक स्तर हैं।"

कोठारी आयोग (1964–66)

प्रोत्साहन

"जब अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में किसी क्रिया को सहमति देते हैं अथवा उस क्रिया में आने वाली समस्याओं को दूर करते हैं तथा सही–गलत के सम्बन्ध में दिशा–निर्देशन करते हैं, यह सारी क्रियाएँ अभिभावक द्वारा प्राप्त प्रोत्साहन कहलाता है।"

रोशी (1965)

आकांक्षा स्तर

"आकांक्षा स्तर वह संभावित लक्ष्य (प्राप्तांक) है जो एक व्यक्ति स्वयं अपने कार्य–निष्पादन के समय निश्चित करता है।"

आइजनेक और उनके साथियों (1972)

शोधार्थी ने वर्तमान अध्ययन में आकांक्षा स्तर से अभिप्राय विद्यार्थियों द्वारा अपने पारिवारिक प्रोत्साहन को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किये गये लक्ष्यों से लिया है। यह लक्ष्य पद, आर्थिक स्थिति, शिक्षा आदि के सन्दर्भ में हो सकते हैं।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-11* February- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

अध्ययन के उद्देश्य

1. विद्यार्थियों के अभिभावक द्वारा प्रदान आकांक्षा स्तर का स्तर ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों के अभिभावक द्वारा प्रदान प्रोत्साहन का स्तर ज्ञात करना।
3. विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर प्रोत्साहन के स्तर का प्रभाव ज्ञात करना।
4. लिंग भेदानुसार विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर प्रोत्साहन के प्रभाव को ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना

अध्ययन की इस प्रकार परिकल्पना निश्चित की गई है–

1. विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर अभिभावक द्वारा प्रदान प्रोत्साहन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. लिंग भेद के आधार पर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

समय की सीमा एवं शोध के स्वरूपानुसार शोधार्थी ने इस शोध के लिए सीमाओं का निर्धारण किया है जो समय, श्रम एवं व्यय के दृष्टिकोण से उचित प्रतीत होता है–

1. शोधकार्य में न्यादर्श का चयन फिरोजाबाद जनपद के यू.पी. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त दो विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
2. शोधार्थी द्वारा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को शोध में सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन की विधि

अध्ययन विधि से तात्पर्य एक निषिचत व्यवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली से हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से यह कह सकते हैं कि षोध विधि उस सारणी को सूचित करती हैं जिस पर चलकर सत्य की खोज या समस्या के कारणों का पता लगाया जा सके। प्रस्तुत शोध में शोध कर्ता ने अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए षोध की प्रकृति को देखते हुए "वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि" का प्रयोग किया हैं।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोधकार्य में फिरोजाबाद जनपद के यू.पी. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त दो उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण

शोधकार्य के लिए दो प्रमुख उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. डा0 कुसुम अग्रवाल द्वारा निर्मित (1983) पैरेन्टल एन्करेजमैन्ट स्केल।
2. डा0 महेश भार्गव एवं प्रो0 एम.ए. शाह द्वारा निर्मित (1996) आकांक्षा स्तर मापनी।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों के संकलन के पश्चात् उनका विश्लेषण एवं विवेचन करना आवश्यक होता है, जिससे शोधकार्य संबंधी उपलब्धियों तथा परिणामों का निरूपण किया जा सके। अतः उक्त कथन के महत्व को ध्यान में रखते

चित्र : 1.1 : सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग

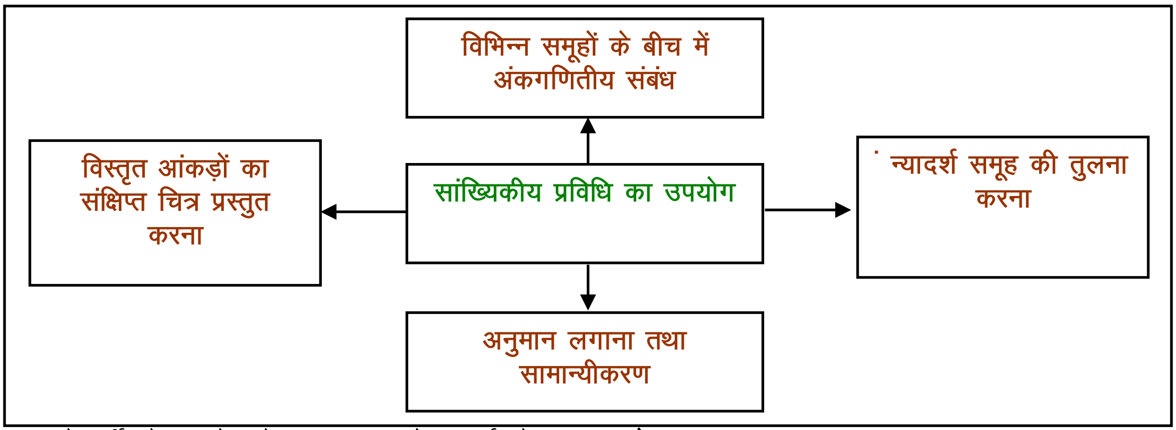

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के संदर्भ में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं निर्वचनात्मक दोनों ही प्रकार की सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया है।

वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. चतुर्थांष विचलन

निर्वचनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

1. एनोवा
2. पोस्ट हॉक टेस्ट

प्रोत्साहन

डेटा विश्लेषण

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन :

तालिका 1.1 विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

स्मूह	कुल संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
छात्र	50	2.89	4.56	0.71	.05 पर असार्थक
छात्राएँ	50	3.58	5.24		

तालिका संख्या 1.1 में प्रदर्शित परिणामों से छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर के मध्यमान, मानक विचलन में अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है। किन्तु सांख्यिकी गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक मान (टी–तालिका) में 98 स्वतत्रांश के लिए .05 विश्वास स्तर पर दिये गये मान से कम है। अतः छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः दोनों के समूहों के मध्यमानों में जो अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है। वह वास्तविक कारणों से न होकर सांयेगिक कारणों से हो सकता है। अतः विश्लेषण को निम्न दण्डारेख द्वारा दर्शाया गया है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावक द्वारा प्रदान प्रोत्साहन का अध्ययन

तालिका 2.1 विद्यार्थियों के अभिभावक द्वारा प्रदान प्रोत्साहन के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

समूह	कुल संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
छात्र	50	346.16	21.03	0.55	.05 पर असार्थक
छात्राएँ	50	343.93	19.91		

तालिका 2.1 में प्रदर्शित परिणामों से छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान मूल्य एवं मानक विचलन में अन्तर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है तथा सांख्यिकी गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक मान 0.55 तालिका में 98 स्वतांत्राश के लिए .05 सार्थकता स्तर पर दिये गये मान से कम है अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अभिभावक प्रोत्साहन के सन्दर्भ में छात्र–छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। इस कारण हो सकता है कि अभिभावक की रूढ़िवादी विचारधारा में परिवर्तन हो रहा है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन करना

विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर उनके अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव के अध्ययन के सन्दर्भ में शोधकर्त्री ने एक मार्गी प्रसरण विश्लेषण (One way ANOVA) का प्रयोग किया है जिससे अभिभावक प्रोत्साहन का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है। अतः एक मार्गी प्रसरण विश्लेषण को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 3.1 : विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव के सन्दर्भ में एफ मान

चर	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
अभिभावक प्रोत्साहन व विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर	0.591	0.01 पर सार्थक

तालिका संख्या 3.1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर प्रभाव के लिए प्राप्त एफ– मान (8.51) जो 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः कहा जा सकता है कि अभिभावकों के प्रोत्साहन का उनके बच्चों के आकांक्षा स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। एफ मान सार्थक होने पर शोधकर्त्री ने पोस्ट हॉक (तुर्की परीक्षण) की गणना की है। जो निम्न तालिका में अंकित है।

तालिका 3.2 विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव के सन्दर्भ में पोस्ट हॉक परीक्षण

सांख्यिकीय मान / प्रोत्साहन स्तर के समूह	कुल संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
उच्च प्रोत्साहन	26	3.79	1.08	2.74	.05 पर सार्थक
सामान्य प्रोत्साहन	50	3.19	0.69		
सामान्य प्रोत्साहन	50	3.19	0.69	1.99	.05 पर सार्थक
निम्न प्रोत्साहन	24	2.75	1.06		
उच्च प्रोत्साहन	26	3.79	1.08	4.09	.05 पर सार्थक
निम्न प्रोत्साहन	24	2.75	1.06		

उपर्युक्त तालिका 3.2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च सामान्य समूहों के मध्य सार्थक अन्तर के लिए CR मान 2.74 प्राप्त हुआ है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है एवं सामान्य–निम्न समूहों के मध्य सार्थक अन्तर के लिए CR मान 1.99 प्राप्त हुआ है जो .05 स्तर पर असार्थक है। इसी प्रकार उच्च–निम्न समूहों के मध्य सार्थक अन्तर के लिए CR मान 4.09 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि अभिभावक प्रोत्साहन के विभिन्न स्तरों के अन्तर्गत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर व अभिभावक प्रोत्साहन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

उपर्युक्त उद्देश्यों के सन्दर्भ में शोधकर्त्री ने आकांक्षा स्तर व प्रोत्साहन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना पीयरसन आघूर्ण विधि से की है जिसे निम्न तालिका 4.1 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.1 अभिभावक प्रोत्साहन व विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में सहसम्बन्ध गुणांक

स्रोत	df	SS	MS	F	सार्थकता स्तर
समूहों के मध्य	2	13.79	6.89	8.51	.05 पर असार्थक
समूहों के अन्दर	97	78.62	0.81		
कुल	99	92.41			

उपर्युक्त तालिका 4.1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अभिभावक प्रोत्साहन व विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.591 प्राप्त हुआ है जो कि धनात्मक व .01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि अभिभावक प्रोत्साहन व विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

शोध अध्ययन की उपलब्धियाँ

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन

छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर के मध्यमान, मानक विचलन में अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है। किन्तु सांख्यिकी गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक मान (टी–तालिका) में 98 स्वतत्रांश के लिए .05 विश्वास स्तर पर दिये गये मान से कम है। अतः छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः दोनों के समूहों के मध्यमानों में जो अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है। वह वास्तविक कारणों से न होकर साांयेगिक कारणों से हो सकता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावक द्वारा प्रदान प्रोत्साहन का अध्ययन

परिणामों से छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान मूल्य एवं मानक विचलन में अन्तर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है तथा सांख्यिकी गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक मान 0.55 तालिका में 98 स्वतांत्राश के लिए .05 सार्थकता स्तर पर दिये गये मान से कम है अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अभिभावक प्रोत्साहन के सन्दर्भ में छात्र–छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन

विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर उनके अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव के अध्ययन के सन्दर्भ में शोधकर्त्री ने एक मार्गी प्रसरण विश्लेषण (One way ANOVA) का प्रयोग किया है। अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर प्रभाव के लिए प्राप्त एफ– मान (8.51) जो 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः कहा जा सकता है कि अभिभावकों के प्रोत्साहन का उनके बच्चों के आकांक्षा स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। एफ मान सार्थक होने पर शोधकर्त्री ने पोस्ट हॉक (तुर्की परीक्षण) की गणना की है। उच्च सामान्य समूहों के मध्य सार्थक अन्तर के लिए CR मान 2. 74 प्राप्त हुआ है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है एवं सामान्य–निम्न समूहों के मध्य सार्थक अन्तर के लिए CR मान 1.99 प्राप्त हुआ है जो .05 स्तर पर असार्थक है। इसी प्रकार उच्च–निम्न समूहों के मध्य सार्थक अन्तर के लिए CR मान 4.09 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर व अभिभावक प्रोत्साहन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

उपर्युक्त उद्देश्यों के सन्दर्भ में शोधकर्त्री ने आकांक्षा स्तर व प्रोत्साहन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना पीयरसन आघूर्ण विधि से की है। अभिभावक प्रोत्साहन व विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.591 प्राप्त हुआ है जो कि धनात्मक व .01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि अभिभावक प्रोत्साहन व विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि लिंग भेदानुसार अभिभावक प्रोत्साहन व आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है जबकि विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अभिभावक प्रोत्साहन का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है अर्थात् उच्च अभिभावक प्रोत्साहन के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर सामान्य व निम्न अभिभावक प्रोत्साहन के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक रूप में कम पाया जाता है। शोधकर्त्री ने अभिभावक प्रोत्साहन व आकांक्षा स्तर में सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की है जिससे स्पष्ट होता है कि अभिभावक प्रोत्साहन व आकांक्षा स्तर में सकारात्मक सहसम्बन्ध होता है। इसका कारण यह हो सकता है कि अभिभावक प्रोत्साहन विद्यार्थी को सकारात्मक पारिवारिक वातावरण व शैक्षिक प्रोत्साहन प्रदान करता है जिससे विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में वृद्धि होती है। उपरोक्त परिणामों की पुष्टि शर्मा (2003), दीक्षित, अमित (2005), जैन (2006) एवं सिन्हा (2006) द्वारा की गई शोध द्वारा भी होती है।इसप्रकार के अध्ययन शिक्षकों को इस बात की जानकारी देने में सहायक होंगे कि वह छात्रों को उनकी क्षमताओं योग्यताओं को पहचानने हेतु उपयुक्त अवसर प्रदान करे जिससे वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप अपने लिए उचित लक्ष्य का निर्माण कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *रॉसी (1965) परेन्टल एनकरेजमेन्ट स्केल अंकुर साइकोलोजिक ऐजेन्सी लखनऊ।*
2. *गुडबार एंव स्केटस (1965) मेथडोलॉजी ऑफ रिसर्च साइकोलॉजी एण्ड सोशलॉजी कफछइजइड न्यूयार्क।*
3. *अग्रबाल. कुसुम (1983) अग्रबाल पेरेटंल ऐन्फरेजमेंन्ट ।*
4. *गैरिट हैनरी ई० (1986) स्टेटिस्टिक्स इनसाइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन लीग मेंन्स ,ग्रीन एण्ड कम्पनी न्यूयार्क ।*
5. *गुप्ता .ए (1993) रिसर्च मेथडोलॉजी, हीथ एण्ड टीप प्रकाशन नई दिल्ली ।*
6. *पाण्डेय के०पी (1999) शैक्षिक अनुसंधान विश्वविधालय प्रकाशन वाराणसी ।*
7. *रार्मा.आर.ए (2001) शिक्षा अनुसंधान. आर.लाल बुक डिपो. मेरठ ।*
8. *वाग देवप्पा. एच.पी (2005) माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि पर माता– पिता के प्रोत्साहन का प्रभाव– जर्नल ऑफ एजूकेशन्स रिसर्च वाल्यूम. 97 ।*
9. *अरोरा.एम(2008) किशोरो की शैक्षिक चिन्ता पर माता– पिता के प्रोत्साहन व कोचिंग की भमिका– जर्नल ऑफ इण्डिया एजूकेशन्स रिसर्च .शा०प्र०न० 10 ।*
10. *कौल लोकेश, (2007) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली विकास पब्लिशिंग हाउस, प्रालि.*
11. *सरोज ,मोनिका एवं मिश्रा, ऊषा (2010), उच्च एवं निम्न आकांक्षा–स्तर वाले मूक–बधिर विद्यार्थियों की आवश्यकताएं और उनका समग्र व्यक्तित्व विकास, परिप्रक्ष्े य, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन*

विश्वविद्यालय (न्यपूा), नई दिल्ली, वर्ष–17, अंक–3, दिसम्बर–2010, पृष्ठ 71–82।

12. *शर्मा, आर0ए0 (2011), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर0 लाल, बुक डिपो, मेरठ।*
13. *हंसराज (2015) शिक्षको की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर के सहसंबघ तथा कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर पर लिंग एवं अनुभव के प्रभाव का अध्ययन (Indian Journal of Educational Studies : An Interdisciplinar Journal 2015, Vol.2, No.1, ISSN No. 2349-6908)*
14. *संतोष, (2016) उच्चतर माध्यमिक राजकीय एवं गैर – राजकीय विधालयों के शैक्षिक वातावरण, विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर टकादमिक दवाव एवं शैक्षिक निष्पति का अध्ययन। (Journal of Ravishankar University, Part-A, 22, 121-124,*
15. *फर्त्याल (2017) ने गाजियाबाद के व्यावसायिक एवं गैर – व्यावसायिक विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया ।*